4 कथनी और करनी

मानव जीवन प्रभु की अनमोल देन है। सभी प्राणियों में मनुष्य को प्रभु ने विशिष्ट शक्तियाँ प्रदान की हैं, इसलिए वह संसार में बहुत ही अच्छे ढंग से जीवनयापन करता है। मगर सभी लोग हर समय सही काम नहीं करते हैं। कई बार मनुष्य कहता कुछ है और करता कुछ है। कई मनुष्यों की कथनी और करनी में अंतर देखने को मिलता है, इस बात को प्रस्तुत निबंध में उजागर किया है।

ईश्वर ने मनुष्य को अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ बनाया है। कई गुणों से उसे सँवारा है। इसका उसे अभिमान भी होता है। परन्तु स्वयं को गुणों की खान समझने वाला व्यक्ति कई बार ऐसे कार्य करता है, जिन्हें वह गलत बताता है। कथनी और करनी में अन्तर के ऐसे कई उदाहरण रोज देखने में आते हैं।

बस्ती के बीच सरकार ने पार्क बनाने की जगह छोड़ रखी थी। बरसात के मौसम में मुहल्ले के एक सज्जन को उसमें फूलों के पौधे लगाने की सूझी। बात अच्छी थी। वे कहीं से पौधे लाए। कतार से उन्हें रोपा। देखभाल की। पौधे बड़े हो गए। कुछ दिनों बाद फूल खिलने लगे। पार्क अच्छा लगने लगा। मुहल्ले के लोग सुबह-शाम पार्क में टहलने लगे।

फूल सबको अच्छे लगते हैं। पार्क में लोगों के आने-जाने से उन्हें यह लगा कि लोग इन फूलों को तोड़ कर ले जाएँगे। उन्होनें एक तख्ती के ऊपर यह लिखकर टांग दिया कि, ''फूल तोड़ना मना है।''

आते-जाते सब उसको पढ़ते, कोई भी फूलों को नहीं तोड़ता। पर मजे की बात तब सामने आई जब लोगों ने तख्ती लगाने वाले सज्जन को बड़े सबेरे जल्दी-जल्दी फूल तोड़ते देखा। वे अपनी शर्म मिटाने के लिए बोले, ''पूजा के लिए तोड़ रहा हूँ।''

बसों में लिखा होता है, ''धूम्रपान करना निषेध है।'' एक बार यात्रा करते हुए देखा कि एक यात्री ने बीड़ी जलाई और पीने लगा। उसे देखकर कंडक्टर ने कहा, ''भाई साहब, बस में बीड़ी-सिगरेट पीना मना है।'' उसने जलती बीड़ी खिड़की से बाहर फेंकवा दी।

थोड़ी देर बाद कंडक्टर ड्राइवर के केबिन में जाकर बैठा, सिगरेट जलाई और दोनों पीने गले। एक दूसरे यात्री ने यह देखा तो लिखे हुए वाक्य की तरफ इशारा करते हुए कंडक्टर से कहने लगे, ''भाई साहब, बस में सिगरेट पीना मना है।'' ''इस पर कंडक्टर शीघ्र बोल उठा, यह वाक्य आपके लिए है, न कि हमारे लिए।''

एक व्यक्ति दुकान पर गया। स्कूटर दुकान के सामने खड़ा कर ही रहा था कि दुकानदार बोला, ''आप अपना स्कूटर वहाँ सामने वाहन रखने के स्थान पर खड़ा करके आएँ।'' सज्जन ने कहा, ''मुझे ज्यादा समय तक थोड़े ही रुकना है, मैं तो सामान लेकर अभी चला जाऊँगा।'' दुकानदार बोला, ''पर दुकान के सामने बीच सड़क पर स्कूटर खड़ा रखना कोई ठीक बात नहीं।''

सज्जन ने स्कूटर वाहन खड़ा करने के स्थान पर ले जाकर खड़ा किया और वापस आकर सामान खरीदने लगे। इतने में स्कूटर लेकर दुकान पर एक लड़का आया स्कूटर दुकान के सामने खड़ा करके वह दुकान के अन्दर चला गया। इस पर उस सज्जन ने दुकानदार से कहा, ''आपने इसे मना नहीं किया।'' वह बोला, ''यह तो मेरा बेटा है।''

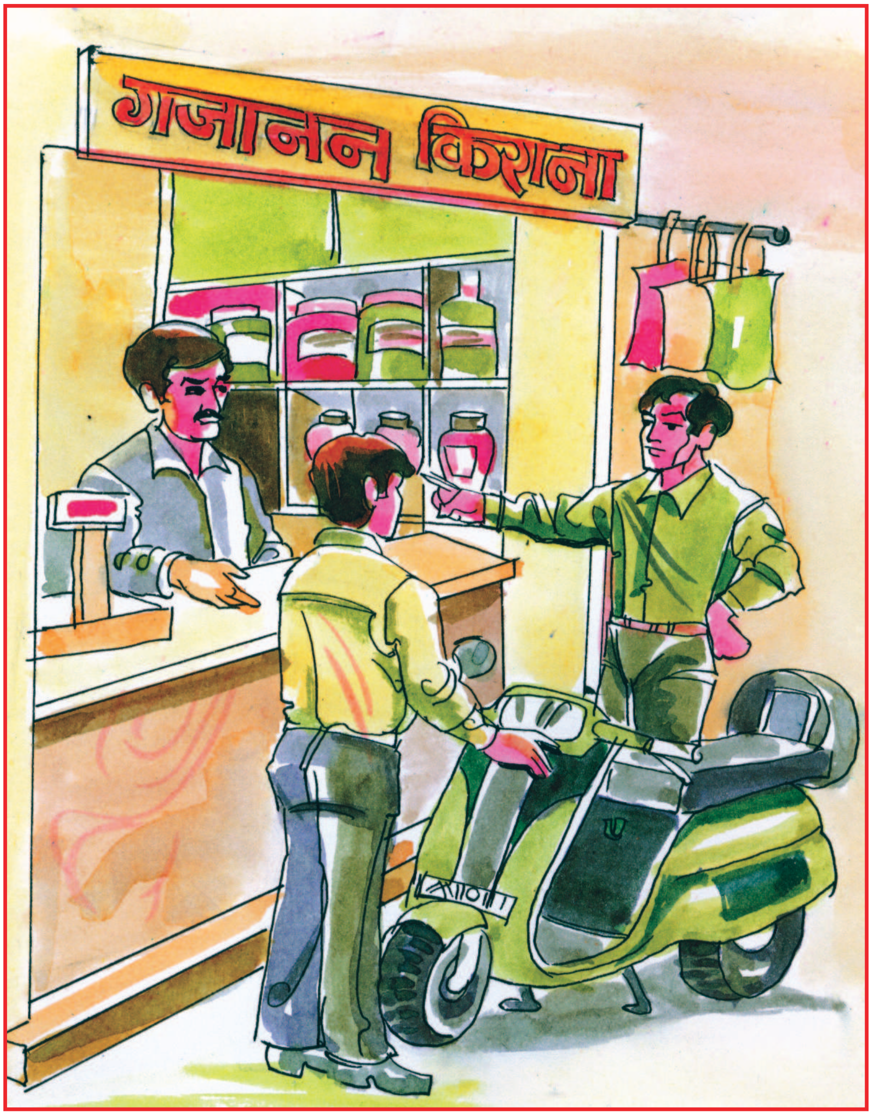

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो आदर्श की बातें करते हैं लेकिन जब उन्हें अपनाना पड़े तो वे आदर्श भूल जाते हैं।

एक दिन एक सज्जन के घर उनके मित्र मिलने आए। दोनों मित्र बातचीत में मग्न थे कि किसी ने दरवाजा खटखटाया। उन्होंने खिड़की से झाँककर देखा, बाहर मकान मालिक खड़ा था, जो पिछले चार माह का किराया माँगने बार-बार आ रहा था। उन्होंने अपने बच्चे को समझाकर बाहर भेजा।

जब बच्चा बाहर गया तो मकान मालिक ने उससे कहा, ''तुम्हारे पिताजी से कहो कि मैं मकान का किराया लेने आया हूँ।'' बच्चे ने तपाक से जवाब दिया, ''पिताजी ने कहा है कि वे घर पर नहीं हैं।'' बच्चे की बात सुनकर मकान मालिक हँसने लगा। घर में बैठे मित्र के चेहरे पर भी मुस्कान आ गई। जिसे देखकर वे सज्जन पानी-पानी हो गए।

एक सज्जन ने अपने पोते को यह सिखाया था कि हमें कभी किसी काम को गलत ढंग से नहीं करना चाहिए। सदा अपनी बारी की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

एक दिन की बात है, वे जल-बिजली के बिल जमा कराने गए। साथ में उनका आठ वर्षीय पोता भी था।

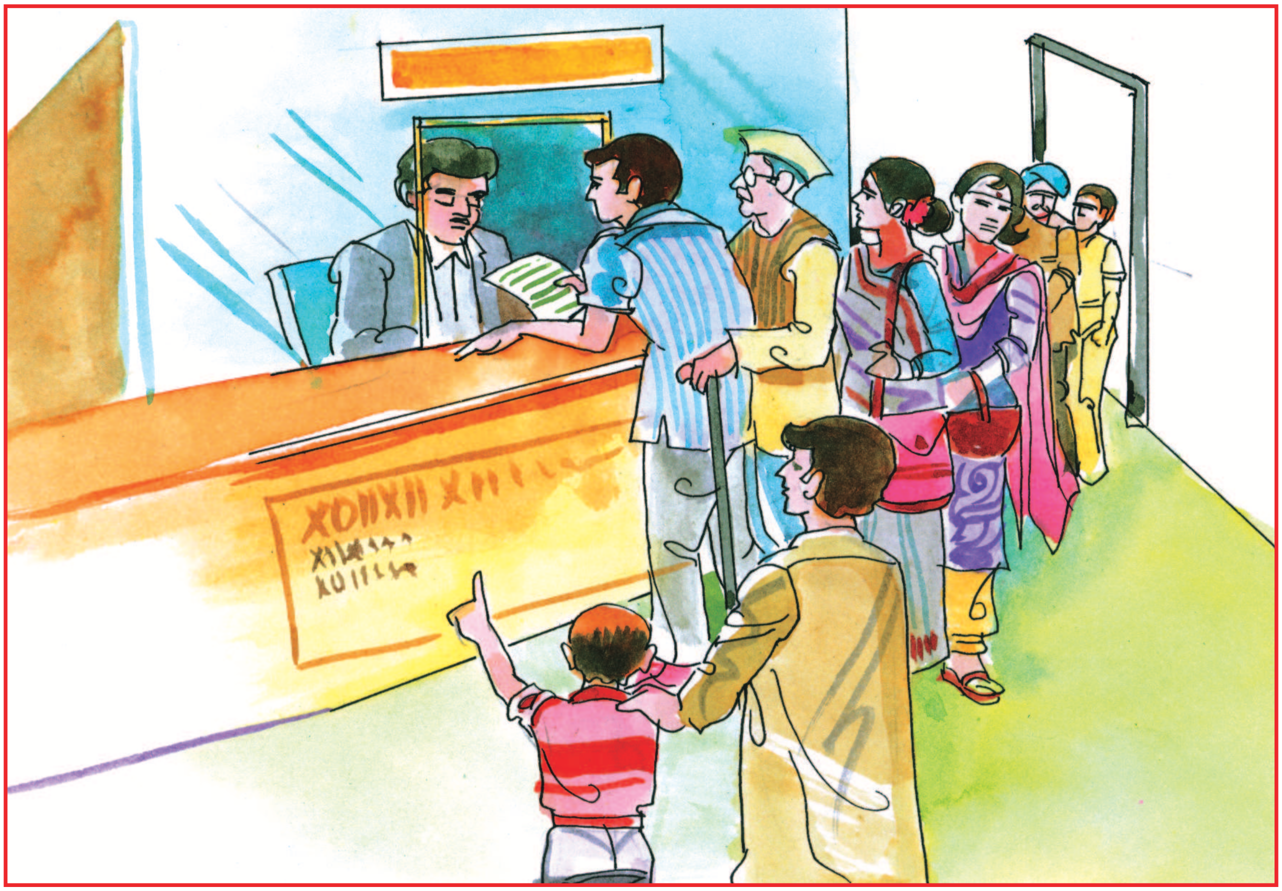

बिल जमा करानेवालों की लम्बी कतार देखकर वे कोई उपाय सोचने लगे। उन्होंने खड़े हुए लोगों को ध्यान से देखा। आगे ही एक परिचित व्यक्ति खड़ा दिखाई दिया। वे तुरन्त उसके पास गए और बोले, ''बेटा ये बिल तुम घर पर ही भूल आए ! लो इसको भी जमा करा दो।'' वह व्यक्ति कुछ बोले, उससे पहले ही बिल व राशि उसके हाथ में थमा दी और एक तरफ जाकर खड़े हो गए। पोता बार-बार कहने लगा, ''दादाजी लाइन में लगिए न।'' उसकी बात सुनकर लोग हँसने लगे।

कई लोग ऐसे होते हैं, जो आदर्श की बातें तो करते हैं, पर उन्हे अपनाते नहीं। इस प्रकार का आचरण अच्छा नहीं होता। ऐसा आचरण करनेवालों को कभी सम्मान नहीं मिलता। वे हँसी के पात्र बनते हैं। इसलिए हमें कथनी और करनी में सदैव समानता रखनी चाहिए।

हो कथनी-करनी एक समान
जग में मिलता तब सम्मान।

शब्दार्थ

संवारा सजाया **अन्तर** भेद, फर्क **पार्क** बाग, बगीचा **कतार** पंक्ति **वर्जित** निषेध, मनाही **कंडक्टर** परिचालक **शीघ्र** जल्दी **तपाक से** जोश के साथ जल्दी से **पोता** पुत्र का पुत्र **प्रतीक्षा** इंतज़ार **राशि** रकम **आचरण** व्यवहार **सदैव** सदा के लिए

मुहावरे

गुणों की खान बहुत गुणी, **पानी-पानी हो जाना** बहुत लज्जित होना

अभ्यास

1. सोचकर बताइए :

(1) ईश्वर ने मनुष्य को अन्य प्राणियों से किस प्रकार श्रेष्ठ बनाया है ?

(2) ''धूम्रपान वर्जित है।'' कहाँ-कहाँ और क्यों लिखा होता है ?

(3) फूल सब को अच्छे क्यों लगते हैं ?

(4) लोग कहाँ–कहाँ कतार में खड़े रहते हैं ?

2. (अ) विरामचिह्न और उनके नाम की जोड़ बनाइए :

(1)	?		(1)	उद्‌गार चिह्न / विस्मय चिह्न
(2)	।		(2)	अवतरण चिह्न
(3)	!		(3)	योजक चिह्न
(4)	,		(4)	प्रश्नसूचक चिह्न
(5)	'' ''		(5)	पूर्णविराम
(6)	-		(6)	अल्पविराम

(ब) वाक्यों को पढ़कर उचित विरामचिह्न का प्रयोग कीजिए :

(1) फूल तोड़ना मना है

(2) वाह कितना सुन्दर दृश्य है

(3) बसों में लिखा होता है धूम्रपान वर्जित है

(4) धारा रात दिन पढ़ती रहती है

(5) पौधे बारिश में ही क्यों लगाए जाते हैं

3. निम्नलिखित वाक्यों में से जातिवाचक संज्ञा के आसपास ◯ चिह्न कीजिए :

(1) मनुष्य अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ है।

(2) शिल्पा ने चार पौधे लगाए।

(3) शहर के लोग सुबह शाम टहलने जाते हैं।

(4) फूल सबको अच्छे लगते हैं।

4. कथनी और करनी में समानता रखने में मुश्किलें आती हैं या नहीं ? चर्चा कीजिए।

5. परिच्छेद पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

आप शुद्ध हृदय से इस बात पर विचार करें कि माता, मातृभूमि और मातृभाषा का आप पर भी ऋण है। एक जननी आपको जन्म देती है, एक की गोद में खेल–कूदकर और खा–पीकर आप पुष्ट होते हैं और एक आपको अपने भावों को प्रकट करने की शक्ति देकर आपके सांसारिक जीवन को सुखमय बनाती है, जिसका आप पर इतना उपकार है, उसके लिए कुछ करना क्या आपका परम कर्तव्य नहीं है ?

प्यारे भाइयो, उठो ! आलस्य छोड़ो, काम करो और अपनी मातृभाषा की सेवा में तत्पर हो जाओ, इस व्रत का पालन करना तलवार की धार पर चलने के समान है।

अत्यंत खेद का विषय है कि आज अधिकांश भारतवासी अपनी मातृभाषा की उपेक्षा करते हैं। वे अंग्रेजी बोलकर अपने अहंकार तथा दूषित मनोवृत्ति का परिचय देते हैं। जो अपनी मातृभाषा का तिरस्कार करता है, उसे कभी देशभक्त नहीं कहा जा सकता।

प्रश्नः

(1) हम पर किस-किस का ऋण है ?

(2) माता का ऋण हमें क्यों अदा करना चाहिए ?

(3) किस व्रत का पालन करना अत्यंत कठिन है ?

(4) किसे देशभक्त नहीं कहा जा सकता ?

(5) गद्यांश को उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

स्वाध्याय

1. अंदाज अपना-अपना

''कथनी और करनी में अन्तर'' विषय पर अपने विचार लिखिए।

2. ''कथनी और करनी में अन्तर'' विषय पर आपके दोस्त ने जो विचार लिखे हैं, उन्हें पढ़िए।

3. करके दिखाइए :

कोष्ठक में दिए गए शब्दों को उचित क्रम में रखकर उदाहरण के अनुसार वाक्य लिखिए :

मैं	कथनी	ज़ाता	रखनी	वे	समानता
सबको	करनी	फूल	हूँ।	में	कहीं
तोड़ना	हर रोज	अच्छे	खेलने	मना	से
चाहिए	पौधे	पढ़ना	लगते	लाए	है।

उदाहरण : **फूल तोड़ना मना है।**

पढ़कर समझिए :

रामजीभाई ने भैंस खरीदकर दूध, घी बेचा और उसके गोबर की खाद से खेतों की उपज भी बढ़ाई। यह तो 'आम के आम और गुठलियों के दाम' वाली बात हुई।

यहाँ रामजीभाई भैंस के दूध को बेचकर पैसे कमाते हैं। भैंस के गोबर की खाद बनाकर उसका भी उपयोग कर लेते हैं। इस प्रकार दूध और खाद दोनों का उपयोग करके मुनाफा कमा लेते हैं। जैसे कि आम खाकर उसकी गुठलियों का भी उपयोग किया जाए। दोनों प्रकार से लाभ होने पर यह लोकोक्ति कही गई है।

लोगों के अनुभव पर आधारित और बाद में समाज में रूढ़ हो गई हो, ऐसी बात या उक्ति को '**कहावत**' कहते हैं।

पढ़कर समझिए –

(1) **आम के आम गुठलियों के दाम** – दोहरा लाभ होना।

(2) **जैसी करनी वैसी भरनी** – कर्मों के अनुसार फल मिलना।

(3) **साँच को आँच नहीं** – सच्चे व्यक्ति को कोई भय नहीं होता।

(4) **काला अक्षर भैंस बराबर** – बिलकुल अनपढ़ होना।

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर रेखांकित शब्दों को ध्यान से देखिए :

(1) हमें <u>अहिंसा</u> के पथ पर चलना चाहिए।

(2) पहाड़ की <u>चढ़ाई</u> बहुत कठिन होती है।

(3) हमारे व्यवहार में <u>विनम्रता</u> होनी चाहिए।

(4) महात्मा बुद्ध ने <u>शान्ति, दया</u> और <u>प्रेम</u> का संदेश दिया।

(5) <u>क्षमा</u> वीरों का आभूषण है।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द : अहिंसा, चढ़ाई, विनम्रता, शान्ति, दया, प्रेम, क्षमा – गुण, दोष, भाव, दशा आदि का बोध कराते हैं।

भाववाचक संज्ञा : जो शब्द गुण, दोष, भाव, दशा आदि का बोध कराते हैं वे '**भाववाचक संज्ञा**' कहलाते हैं।

★ **निम्नलिखित शब्दों में से भाववाचक संज्ञा के चौकोर पर सही ✔ निशान कीजिए :**

सच्चाई	सच्चा	ऊँचाई	ऊँचा	बचपन
लंबाई	अमीरी	लड़ना	बुढ़ापा	गंगा

➔ **निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए। रेखांकित शब्दों को ध्यान से देखिए :**

(1) रेलवे स्टेशन पर लोगों की <u>भीड़</u> रहती है।

(2) बच्चों की <u>टोली</u> होली खेलने निकली है।

(3) <u>सभा</u> में कई लोग इकट्ठे हुए।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द : भीड़, होली और सभा– '**समूहवाचक संज्ञा**' कहलाते हैं।

योग्यता-विस्तार

यह भी कीजिए :

- विभिन्न स्थानों पर लिखी हुई सूचनाओं को पढ़िए और कक्षा में उसकी चर्चा कीजिए।
- गिजुभाई बधेका और पंचतंत्र की कोई तीन कहानियाँ पढ़कर उनका सारांश भीतिपत्र (बुलेटिन बोर्ड) पर रखिए।